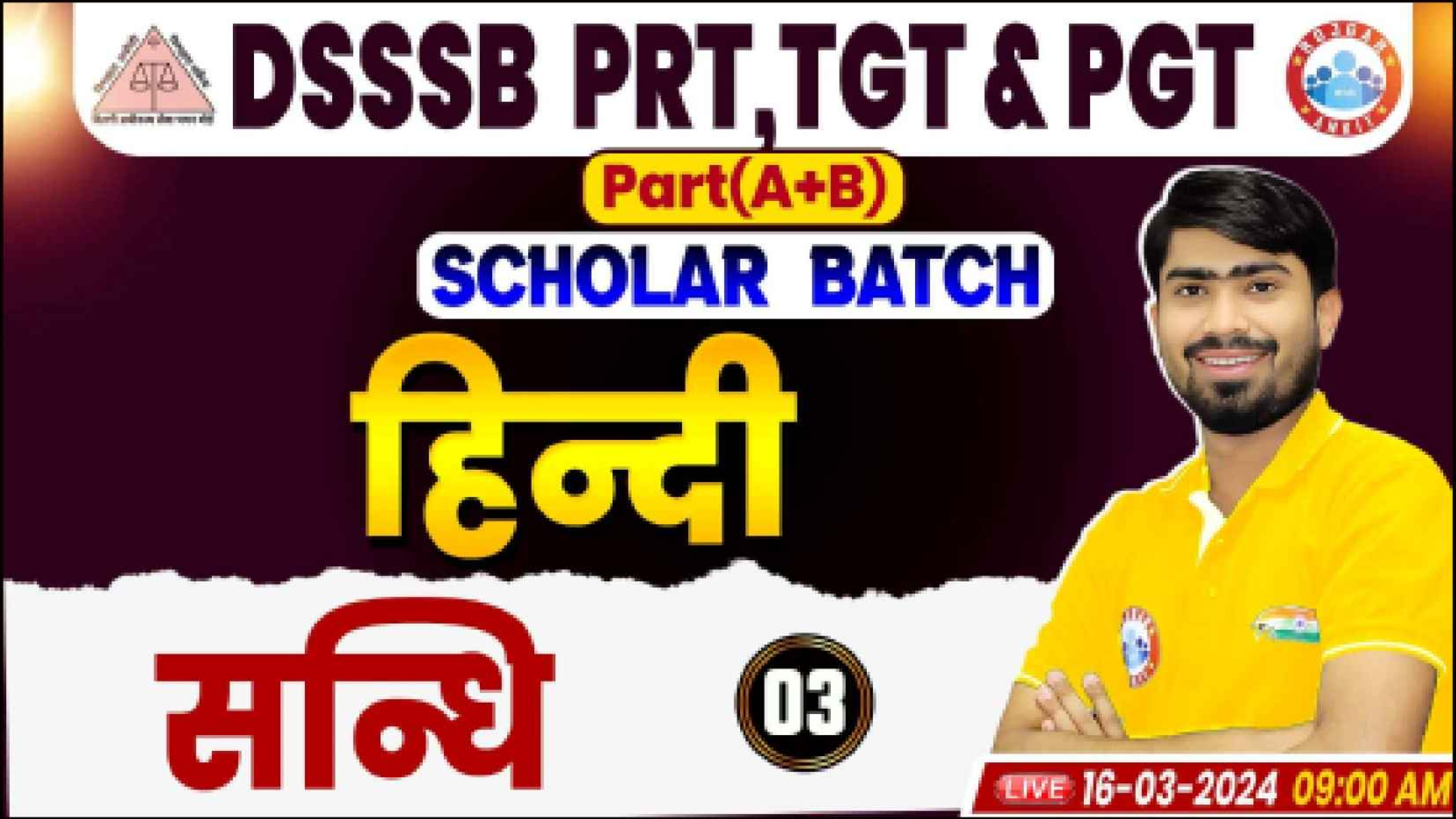
DSSSB PRT, TGT & PGT
Part(A+B)
SCHOLAR BATCH
हिन्दी
सन्धि
03
LIVE 16-03-2024 09:00 AM

इ, ई, उ, ऊ, ऋ + —
य व र

इ + उ = यु

उपरि + उक्त = उपर्युक्त

अति + उत्तम = अत्युत्तम

अभि + उदय = अभ्युदय

इ + ऊ = यू

नि + ऊन = न्यून

वि + ऊह = व्यूह

इ + ए = ये

अधि + एषणा = अध्येषणा

प्रति + एक = प्रत्येक

ई + ऐ = यै

देवी + ऐश्वर्य = दे०यैश्वर्य

सखी + ऐश्वर्य = सख०यैश्वर्य

ई + आ = या

सख्यागमन

देवी + आगमन = देव्यागमन

मही + आधार = मह्याधार / मह्‌याधार

उ + अ = व

सु + अच्छ = स्वच्छ

मनु + अन्तर = मन्वन्तर

अनु + अय = अन्वय

उ + आ = वा

सु + आगत = स्वागत

मधु + आलय = मध्वालय

उ + इ = वि

अनु + इत = अन्वित

उ + ओ = वो

गुरु + ओदन = गुर्वोदन

ऊ + आ = वा

भू + आदि = भ्वादि

वधू + आगमन = वध्वागमन

ऋ + अ = र

पितृ + अनुमति = पित्रनुमति

ऋ + आ = रा

मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा

पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा

ऋ + इ = रि

मातृ + इच्छा = मात्रिच्छा

पितृ + इच्छा = पित्रिच्छा

ऌ + आ = ला

ऌ + आकृति = लाकृति

⑤- अयादि सन्धि ⇒ यदि ए, ऐ, ओ, औ का मेल किसी अन्य स्वर से हो तब यह क्रमशः अय्, आय्, अव्, आव् में परिवर्तित हो जाते हैं।

अथवा

ट्रिक- शब्द के बीच में 'व' या 'य' आये तब वहाँ अयादि सन्धि होती है।

ए + अन्य स्वर = अय्

ऐ + अन्य स्वर = आय्

ओ + अन्य स्वर = अव्

औ + अन्य स्वर = आव्

ए + अ = अय्

शे + अन = शयन

ने + अन = नयन

श + अ + य

य + अ

अ + य = अय

(१) ऐ + अ = आय्

गै + अक = गायक

नै + अक = नायक

शै + अक = शायक

विनै + अक = विनायक

ग् + आ + य् + अ, क् + अ

आ + य् = आय्

ऐ + इ = आयि

नै + इका = नायिका

गै + इका = गायिका

ओ + अ = अव्

पो + अन = पवन

भो + अन = भवन

श्रो + अन = श्रवण

न → ण

ओ + इ = अवि

पो + इत्र = पवित्र

गो + इनि = गविनी

ओ + ई = अवी

गो + ईश = गवीश ✓

औ + अ = आव्

पौ + अन = पावन

पौ + अक = पावक

औ + इ = आवि

नौ + इक = नाविक

भौ + इनि = भाविनी

औ + उ = आवु

भौ + उक = भावुक

अयादि सन्धि ✓

समाप्त

व्यंजन सन्धि – यदि किसी व्यंजन के आगे किसी स्वर अथवा व्यंजन का मेल होने से व्यंजन में जो परिवर्तन होता है। उसे व्यंजन सन्धि कहते हैं।

सत् + आचार = सदाचार

(सत् → व्यंजन, आ → स्वर)

अप् + ज = अब्ज

(प् → व्यंजन, ज → व्यंजन)

व्यंजन सन्धि के नियम :-

01. यदि स्पर्श व्यंजनों के प्रथम अर्थात क्, च्, ट्, त्, प्, के बाद किसी वर्ग का तीसरा, चौथा, स्वर या अन्तस्थ: व्यंजन (य, र, ल, व) आए तो वर्ग का पहला वर्ण क, च, ट, त, प के स्थान पर अपने ही वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है। जैसे- ग, ज, ड, द, ब

वाक् + जाल = वाग्जाल

(ढ)

सत् + आचार = सदाचार

दिक् + अम्बर = दिगम्बर

वाक् + ईश = वागीश

वाक् + दान = वाग्दान

उत् + घाटन = उद्घाटन

ऋक् + वेद = ऋग्वेद

जगत् + ईश = जगदीश

वाक् + ईश्वरी = वागीश्वरी

सत् + गुण = सद्गुण

दिक् + भ्रम = दिग्भ्रम

दिक् + विजय = दिग्विजय

प्राक् + ऐतिहासिक = प्रागैतिहासिक

नोट - यदि स्पर्श व्यंजन का प्रथम अक्षर (क, च, ट, त, प) +

+ व्यंजन = आद्य तृतीय

+ स्वर = पूर्ण तृतीय

02. यदि स्पर्श व्यंजनों के प्रथम अक्षर के आगे कोई अनुनासिक व्यंजन आये तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का आधा पांचवा अक्षर हो जाता है। जैसे –

वाक् + मय = वाङ्मय

उत् + मत्त = उन्मत्त

षट् + मास = षण्मास

अच् + नाश = अन्नाश

अप् + मय = अम्मय

उत् + नयन = उन्नयन

जगत् + नाथ = जगन्नाथ

उत् + मूलन = उन्मूलन

(अ, इ, उ, ऋ) (आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ)

03. जब किसी ह्रस्व या दीर्घ स्वर के आगे छ् आता है तो छ के पहले च् बढ़ जाता है। जैसे-

परि + छेद = परिच्छेद

लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया

आ + छादन = आच्छादन

अनु + छेद = अनुच्छेद

वि + छेद = विच्छेद

वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया

स्व + छन्द = स्वच्छन्द